



‘इतिहासहंता’क बहुचर्चित कवि
रामलोचन ठाकुर कविताक अतिरिक्त
अग्रदूत, कुमारेश काश्यप आदि नामे
कथा, हास्य-व्यंग्य, निबन्धादि विभिन्न
विधाक सुपरिचित हस्ताक्षर। मिथिला
मैथिल, मैथिलिक प्रति हिन्दी
साम्राज्यवादी सरकारक घृणित कोलो-
नियल दृष्टिकोणक प्रबल विरोधी—ते
मैथिली आन्दोलन सँ सम्बृक्त, मैथिली
मुक्तिमोर्चाक संयोजक। मैथिली
रंगमंचक कुशल अभिनेता ओ निर्देशक
‘अग्निपत्र’, नाट्य विषयक पत्रिका
‘रंगमंच’ ओ हस्तलिखित पत्रिका
‘शुल्फा’क सम्पादनक अतिरिक्त कएकटा
पत्रिकाक बेनामीसम्पादक। अद्यावधि
प्रकाशित पोथी—इतिहासहंता (कविता
१९७७), बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य,
१९८१), प्रतिध्वनि (अनु० कविता,
१९८२), जादूगर (अनु० नाटक,
१९८२), मैथिली लोक कथा (१९८३),
आजुक कविता (स० १९८४), माटि
पानिक गीत (१९८५) ओ देशक नाम
छले सोनचिरेया (कविता, १९८६)।

देशक नाम छले
सोनचिरेया

देशक नाम छले सोनचिरेया

राम लोचन
ठाकुर

① देशक नाम छले
सोनचिरेया
② रंगमंचक कुशल
२७

देशक नाम बल सोनचिड़ैया

रामलोचन ठाकुर

अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता

रामलोचन ठाकुरक कविता

(C) श्रीमती सीता ठाकुर

प्रकाशक—

अरुणोदय प्रकाशन

३३/५, डॉ० देवदार रहमान रोड,

कलकत्ता-७०००३३

मुद्रक—

पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स

कलकत्ता-५

पहिल खेप—

शक्तिपूजा, १३६३ (१६८६)

मूल्य—

साधारण पाठकीय—पांच टाका

विशेष—पन्द्रह टाका

Desak Nam Chhalai Sonchiraiya

Maithili Poem

(1986)

by RamLochan Thakur

समर्पण :—

मुक्ति युद्धक

विगत

आगत

ओ वर्तमान

अनाम योद्धा लोकनि के

अपन असीम श्रद्धा

सम्पूर्ण आस्था

ओ

विश्वासक संग ।

रामलोचन ठाकुर

१९७१ सँ १९८४ धरिक
रचनाक संकलन थिक

ई पोथी

आशा

जे पाठक लोकनि

कविता पढ़वाकाल

एइ बात के

ध्यान में रखताह।

आभार :-

पोथीक किछु रचना

शिखा

देसिल बयना

देशकोस

मैथिली अकादमी पत्रिका

बसात

में प्रकाशित आई।

हम एइ सभ पत्रिकाक

आभारी छी।

क्रम

× × ×

१	मैथिली सँ	७
२	सुब्बा मैथिल	८
३	चेतौनी	१०
४	कहैत छला बाबा	१२
५	भूख	१३
६	हमरा कने बिलम्ब हएत	१४
७	भाइ ! अहाँ घुरि जाउ	१८
८	आगामी काल्ह हमरे सभक हएत	२०
९	दोहाइ ओइ पारक छी	२२
१०	ओहू दिन एहिना भेल रहै	२५
११	बिहाड़िक बाद आमक गाछी	२६
१२	चारण हम ओकरे छी	२१
१३	कै फियत	२२
१४	ओ हमर भाइ छल	२३
१५	आर कहियाधरि	२५
१६	मृत्यु अभिमन्युक	२६
१७	अजगुत देश	२७
१८	एहि संघर्ष मे	४२
१९	अनेकता मे एकता	४६
२०	देशक नाम छलै सोनचिड़ैया	५१
२१	किछु क्षणिका	६३

मैथिली सं

हे मैथिली !

आर कते दिन

आर कते दिन कनैत - कल्पैत

मेल मरणासन्न

पड़ल रहब

वाल्मिकि आश्रम मे

अशोक बन सं वाल्मिकि आश्रम

की मानि लेब अपन नियति

विश्वास करू

पूब - पश्चिमक बिहाड़ि

नहि पार क पाओत

लछमन - रेखा

नहि आओत मिथिला देश

आ अहांक चारिकोटि लव - कुश

कुभकर्णी निद्रा मे

सुतले रहता

अहां पर ल्याओल गेल

मिथ्या आरोपक खंडन

नहि भ पाओत

आ अपन घर सं बलाओल गेलि अहां

एहिना बौआइत रहब

रने - बने

नहि पावि सकब

अपन उचित सम्मान

देशक नाम छलै सौनचिड़ैया

आ कालक्रमे
 मिथ्या आरोप
 भ जायत सत्य
 कारण अहांक चारिकोटि सन्तान जे
 नपुंसक छथि
 तें, हे सीते !
 स्वयं उठू
 आ
 एक बेर फेर
 बनि जाउ
 काली-कराली-खप्परवाली
 मचा दिअ प्रलय
 एक बेर
 मात्र एक बेर
 आ
 जं से नहि क पावी
 त हमर अनुरोध
 खा लिअ बिस्व
 किन्तु
 बिदेहक नाम के
 बदनाम जुनि करी

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

सुच्चा मैथिल

परम्पराक लीख ओ
 नजि छोड़ताह
 नजि कटओताह
 आचार संहिताक वर्णित ठीक
 कोरा धोती के
 नजि सजओताह
 कारण ओ छथि सुच्चा मैथिल
 मिथिलाक सपुत—
 आ हमरा
 हंसी ल्यै-ए जे
 मिथिला मैथिल वा मैथिली
 अछिये कतय
 आइ भारती
 गुदड़ी सं भूपने अपन अंग
 दावा पर चिपड़ी पथैत छथि
 हीरामनि सुग्गा
 पहिनहि मरि चुकल अह
 आ
 तीन दिन सं अन्हार
 तौनी सं दन्हने अप्पन पेट
 बैसल छथि
 एकजनियाँ एकचारी में
 महा पंडित मंडन मिश्र
 स्वतः प्रमाणम्
 परतः प्रमाणम्
 रटैत
 जानि ने
 कोन शंकराचार्यक
 प्रतीक्षा छनि

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

चेतौनी

पास भेल अछि
कते ठाम सँ
कइएकटा प्रस्ताव
ओतबे नञि
भेल'छि आन्दोलन आ अनशन
रक्तक्षार बहओने अछिए
मिथिला केर सन्तान
किन्तु
जन्महि क बहीर
ई भारत सरकार
ने देलक ध्यान
पाचि ने सकली हमर मैथिली
अपन उचित सम्मान
कहु अहीं
ई राष्ट्र आव की धो-धो चाटव
आर एकर रक्षार्थ
माय केर गरदन काटव
नहि कथमपि
बरू आगि लगौ
एइ राष्ट्र
बिलटि जाओ भारत
अन्हरा धृतराष्ट्र
आब न सहतै

मातृभूमि ओ भाषा केर अपमान

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

कूदि पड़त

क्रान्तिक ज्वाला मे

मिथिला केर सन्तान

कपा देत

धरती

पताल

असमान

ते

आवहुँ तों चेत

रे पटना के पंडा

रे डिल्लीक दलाल

हिन्दी के पोसा कुकुर

—शैतान

जुनि करबा

इतिहासक पुनरावृत्ति

सन्मुख ज्वालामुखी

बढ़ा जुनि डेग

सावधान

नहि त ई मिथिला देश

धनत विश्व के

दोसर बंगला देश

दोसर वियतनाम

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

कहैत छला बाबा

कहैत छला बाबा

मूक होय बाचाल

नांघय पंगु पहाड़

जं चाहथि भगवान

सर्वशक्तिमान

अनाथक नाथ

श्री जगन्नाथ

परञ्च देखि रहल छी उनटे

आन्हर-बहीर

पैरालाइब्ड शरीर

बाटक कोटि भिखारि जकां

चरिपहिया काठक गाड़ी पर बैसा

डोरी ल्या

घिसिया रहल-ए

एइ कात सं ओइ कात

एइ गली सं ओइ गली

नेनो-भुटका सभ

ढोल-भालि बजा

नचैत-गवैत, जेना

क रहल हो उद्घोष

अपन शक्तिक

कहैत छला बाबा

से छल गप्प

जे अइ प्रत्यक्ष—

से थिक सत्य

भूख

दू आखरक एकटा शब्द

—भूख

पेटक

वा

सेक्सक

इएह सभ किछु थिक।

जीवन

जिज्ञासा

अनुभव

अभिलाषा

फूसि बात

जे

पिरथी घरै-ए

सूर्यक

चा

रु

का

त

हमरा कने बिलम्ब हएत

आ

एकरा एकटा संयोग

अथवा

विसंयोग—जे कोनो संज्ञा देल जाए

जे एहि सत्ताइस बर्ष सं

हमहूँ बैसल वा बैसाओल

गेल धार छी अबस्स

एहि दर्शक - दीर्घा मे

भाइ !

बड़ पैघ छइ ई नाटक

आ तहिना छइ दृश्यक बहुलता

उएह स्वाधीनता - संग्राम

उएह आजादी

उएह अमर शहीद

उएह हिन्दू - मुसलमान

उएह कश्मीर

ताशकन्द सं शिमला - शिखर - सम्मेलन

बुद्धिया फूसि

पड़ोसियाक संग दूसि

राशन पर भाषण

फालतू अनुशासन

अहिंसाक माला

गड़बड़ घोटाला

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

गरीबी हटाउ—

‘ए’ क विस्फोट

बोगस भोट

गान्धीवादक गर्भ सं

गणतांत्रिक समाजवादक उत्पत्ति

उएह रटल - रटाओल शब्द—

समाज विरोधी राष्ट्र विरोधी

टेरोरिष्ट, एक्स्ट्रिमिस्ट...

लोक भेल जब्द

विकट - विकट समस्या

सहज समाधान

मुश्किल आसान

चिन्नीक भाव नोन

निर्लज्जताक संग

मा - बाप, धिया - पुताक संग

दर्शन करैत रहू

छोट - पैघ लाल त्रिकोण...

किन्तु आव

दृश्य - परिवर्तन लेल

पदाँ नहि खसबाए पड़ैत छइ

अन्हार कएनहि सं चलि जाइ छइ काज

आ चुप्पे

ककरो प्रवेश

ककरो प्रस्थान

दर्शक के बोरे हएवा सं बचएवाक लेल

पेश कएल जाइ छइ

अनिवार्य रूपे

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

कोनो तानसेनक धुन पर
कोनो दरबारी कवि - विरचित
—स्तवन

ओना
एकरा कहल जाइ छइ—राष्ट्रगीत
आ दर्शक के बाध्य क देल जाइ छइ
उठि के ठाढ़ हएवा लेल
ओकर पएरक भुनभुनी
छुटि जाइ छइ
ओकर औंघी
टुटि जाइ छइ
आ फेर बैसि जाइए सभ
फ्रेस मिजाज सं
अग्रिम दृश्यावलोकनार्थ
किन्तु
चड़काहा कलाकार सभ
मेक - अप तर मुकओने अपन असली रूप
दुग्धफेनी बस्त्रतर सड़लाहा देह
ट्रेप - रेकार्ड द्वारा प्रसारित डायलगा
तर अपन तोतराह बोल
अभिनयक नाम पर
हिजरा जकां चमकवैत
अपन हाथ - पएर, आँखि - मुँह
आ
लाल - पीयर - हरियर भक-इजोत
नहि जमा पवैछ
कनिजो प्रभाव
भाइ !
सुनैत छी

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

आनो ठाम होइ छइ नाटक
मुक्त आकाश तर
विशाल पिरथीक बक्षपर पसरल
हरियर-हरियर दूभि पर
दर्शक आ अभिनेता में नहि होइ छइ
कोनो पार्थक्य
आ दर्शक दिघाए सं
जाइछ कलाकार
नहि होइ छइ कोनो
मेक-अप
डूँस

आ ओ सभ
अपनहि मुँह सं बजैछ
कहाँ होइ छइ प्रयोजन कोनो
तानसेन
वा चाइजीक

सरिपहुँ
ओ नाटक कर्त्तक सुन्नर होइत हेतै
किन्तु
ताइ हेतु अनिवार्य
एइ नाटक टाटक समाप्ति
एइ मंचक विनाश
आ दर्शक फेर औंघा रहलए
तें हे हमर अग्रज
अहाँ अगुआउ
जुनि करी प्रतीक्षा हमर
हमरा कने विलम्ब हयत

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

भाइ ! अहाँ घुरि जाउ

आ
 आपन अमजक अस्थि सं
 जकर सीमा केँ बेदने
 रही अहाँ, अपन सङ्योगी
 गद्दीदक शारा पर
 रोपने रही तुलसी
 गुलाब, रजनीगन्धाक गाछ
 सींचने रही अपन शोणित सं
 से रहल कहौं
 जाइ माली के क गेल रही
 नियुक्त—एकर रक्षार्थ
 —कहिया ने उखाड़ि फेकलक
 आ
 तुलसीक जगह तुतमलंगा
 गुलाबक जगह कोनो बनैया—बेल
 रजनीगन्धाक जगह कोनो बनकटैया “ क
 गाछ रोपि देने अइ
 भाइ !
 ओ जे फल अहाँ देखै छिए ने
 से सरिपहुँ थिक कागतक
 आ लाल टुह-टुह
 पुष्ट, पेघ-पेघ फल
 कोनो सिनुरिया आम वा
 दाड़िम नजि थिक

आ त महकारा फल थिक
 भाइ !
 एकरो सींचल गेल छइ
 अहाँक अनुजक शोणित सं
 जे केने छल विरोध
 अहाँक रोपल गाछ केँ
 उखाड़बाक
 आ तेँ
 घोषित कएल गेल छल
 —विद्रोही
 ओना सत्ताइस वर्लक बादो
 मुख्य दुआरिपर
 अहाँक लगाओल ओ
 —नामपट
 ओहिना झुलि रहल छइ
 सभ किछु ओहिना छइ
 किन्तु ओ सभ किछु नजि छइ
 अहाँक स्वप्नक स्वर्णिम बाग
 ई नजि थिक
 किन्हुँ नजि थिक
 भाइ ! अहाँ घुरि जाउ

आगामी काल्ह हमरे सभक हएत

आ

तोहर निर्मम हत्या के हम
एखनो नजि बिसरि पओने छी
भाई !

हत्याराक दानवी देह
औखन नाचि रहल-ए
हमरा आंखिक सोभा

हमरा दुख अइ
असीम दुख
जे

तोहर चिताक आगि
नजि संयोगि पाओल
किन्तु

हमरा लोकनि
पजारने रही जे घूर
से पभायल अइ कहाँ
हम त ओकरा
मात्र भांपिटा आयल छी

जे प्रातः काल
समस्त कोबर करसी
वदलि जेतैक

सुम्हुर मे
जकर एक-एक कण मे रहतेक
वारुदक शक्ति

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

धधरा कहाँ क पाओत ओ काज
आ

एइ रातिक गुञ्ज अन्हार मे
हमरा सभ के
तय क लेबाक अइ

बहुत रास बाट
पहुँचि जेबाक अइ
ओइ दिवड़ा भीड़ पर
जतय स

काल्हिक बाल सुरुजक संग
देवाक अइ नारा
बदेवाक अइ डेग
आजुक बुढ़वा सूर्य
मरि चुकल अइ

ई अन्हार रहौक अमके लेल
किन्तु आगमी काल्ह

हमरा सभक हएत
हमरे सभक हएत

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

दोहाइ ओइपारक छो

जय मतहतारि
तोहर सेवा के के केलकौ
इनिरा, जय परकाश केलकौ
जगजीवन, देशाइ केलकौ
चनशेखर सं चरण सिंहधरि
इलोक पदलकौ
दोल-भालि-मिरदंग वजलकौ
वतर्ज भारतनाथ्यम्
स्वामी नाचि-नाचि क
चओर डोलेलकौ
शुरु रेल सं
शेष जेल धरि
जाजक धुनि पर
नाचि-नाचि क
जार्ज महोदय आरती केलकौ
वल्लिप्रदान निम् जनता केर
पुलिस-रूप जल्लाद चढेलकौ
खुब नहेलकौ रक्त-धार मे
भय प्रसन्न तौ
हन्डू ह परसेन्ट
वरं ब्रूहि कहि धुधुन हिलओले
खुब बिलहले
आलेर, पाभरि
यथायोम्य वर
पथिया—पथिये
ककरो

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

पी० एम० के चेयर
त ककरो होम
इन्डस्ट्री ककरो

केओ डिफेन्स ल सेन्स गमओलक
केओ दधीचि-पद पवितहि
दौड़ल अमेरिका

अपरेशन करवाए

दबकल रहाल भाव इनिराटा
जे अरियाति के छलौ अनने
आ जनता ?

जन ता वाद पड़ल
जनता नदिया सं बाध बनल
अछि गरजि रहल

डिल्ली, पटना

आ गाम - गाम
अछि तरसि रहल
भुखल - प्यामल
निम् जनता

जहिना छल तहिना
बनल रहल
रौदी - दाही भुखमरी
अशिक्षा बेकारी केर
गुब्बज अन्हार मे भटक रहल
बाजार भाव

अगमान चढ़ल
सरिसोक तेल
चलि गेल स्वर्ग

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

नूनों बिकाइत अछि

टके सेर

नेता कहैछ

फिरि आएल देश मे

प्रजातंत्र

आ बनल पमरिया के तेसर

अखबार, रेडियो

हांजी, भलेजी भले

गायि रहल

जनता अयोध की जानि पाओत

ई प्रजातंत्र केर तंत्रेटा थिक

मूल, महापंडित केर

तैयो

भितरे - भितर

अछि चिनगी सुनगि रहल

सुन्वा क्रान्तिक

ते, दोहाइ

दोहाइ हे सनअठत्तरि साल

दोहाइ अजन्मा संग्रामी नेता

दोहाइ जनता जनार्दन

सर्वद्वारा समुदाय

एक खेप दइक कसि के टाहि

जोंक आ उड़ीसक विरुद्ध

मुक्ति संग्रामक

दोहाइ

दोहाइ ओइपारक छी

ओहू दिन एहिना भेल रहै

ओहू दिन

एहिना भेल रहै

जादुगरक हाथक लाठी चमकल रहै

आ लोक मे

दुर्ग मन्त्रि गेल रहै

लोक

भेड़ियाभसान लोक

युग - युग सं देखैत आयल - ए

जादूक खेल

आ मुग्ध भ

ब्रजवैत रहल - ए थपड़ी

करैत रहल - ए बाह - वाह

लोक

भेड़ियाभसान लोक

अपन स्मृतिक कमजोरीक कारणे

प्रत्येक खेल के

बुझि लै - ए नव

अभूत पूर्व

जखन कि

एकेटा खेल

वेर - वेर दोहराओल जाइत रहलै - ए

कहियो

शुरू सं शेष

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

त कहियो
 दोष सं शुरू
 कहियो किछु जोड़ि क
 त कहियो किछु घटा क
 आ
 एहि समस्त खेलक केन्द्र मे
 रहलै - ए एकटा छँडी

—जादुक छँडी

लोक
 भेड़ियाभसान लोक
 नजि बुझि पवै-ए
 जे ई समस्त खेल
 ओही छँडीक चारुक त
 चकमाउर देत छइ
 जकरा हाथ मे
 छँडी रहैत छइ
 ओ सर्वगुण सम्पन्न
 सर्व शक्तिमान
 सर्वज्ञ बनि जाइए

लोक
 भेड़ियाभसान लोक
 नजि बुझि पवै-ए
 जे एहि खेल मे
 पादी प्रतिवादीक लड़ाइ
 जे कि छँडीक खेल होइ छइ
 लोक देखौआ छइ
 एहि मे

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

केओ मरै नजि छइ
 मरैके बहनाटा करै छइ
 ओना
 छँडी त बेधरक चलै छइ
 परञ्च प्रतिवादी पर नजि
 दर्शकेक कण्ठार पर पड़ै छइ
 दर्शके मरै-ए

आ फेर दर्शक मे
 मचि जाइ छइ दूर
 पड़ाइत लोक
 पिचाइ-ए, मरै-ए
 मुदा

लोक
 भेड़ियाभसान लोक
 से नजि बुझि पवै-ए
 ओ नजि जनै-ए
 जे दुनू जादुगर
 वास्तव मे अइ कठपुतरी
 जकर जोरी छइ
 कतौ आनठाम
 जकरा इशारा पर
 होइ छइ समस्त खेल
 (ओना
 ई तकनीक
 कने नवधरि अबसे छइ)

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

लोक

मेड़ियाधसान लोक

प्रत्येक खेल मे दहुरि जाइ-ए

वाह - वाह करे-ए

थपड़ी बजवे-ए

हुरे मे पड़ाइ-ए

पिचाइए

मरे - ए

●

विहाड़िक बाद आमक गाछो

●

एइखन जेना समाप्त भेल हो युद्ध

चहुँदिस वातावरण

छेक निस्तब्ध

भीतु आर संवस्त

मुर्दवटी सन शान्त

भयावह दृश्य

मातृभूमि केर प्रहरी केर लहस

अंग - भंग छिड़िआयल

भरल मैदान

स्वन्दन हीन

प्रकाश हीन

निष्प्राण

छह प्रत्यक्ष गवाह

छले ओ युद्ध

केहन भयावह

केहन शत्रु - दल शौर्य

लूटल देल उजाड़ि

प्रकृति सौन्दर्य

भू - सन्तान

अतर्कित पाओल गेल

डटल

लड़ल

आ मरल

न देखल पाछु

१६

देशक नाम छले सोनचिड़िया

देशक नाम छले सोनचिड़िया

पाओल बीरगति
 भरल अघर मुस्कान
 देखि
 बिनाशक बीच
 आश - आलोक
 बुन्द - बुन्द देल
 शोणित
 स्वेद
 चुआय
 सींचल मा केर कोर
 निश्चित जनमत
 सुन्दर
 स्वस्थ
 भविष्य
 सुन्दर सं
 सुन्दरतम हांयत काल्हि
 किन्नहु पुनि
 ककरो
 नजि गलत दालि
 पुनः
 शान्ति श्री
 अपन ओछाओत
 सेज
 गाओत
 लोड़ी
 सुन्दर
 सोहर गीत

देशक नाम छले संनचिड़ैया

चारण हम ओकरहि छी

एक सहो कविता

पहले

एक सार्थक वक्तव्य होती है।

—धूमिल

जे नजि छइ
 ताइ में अविश्वास
 जं नास्तिकता थिक
 त सरिपहुँ हम नास्तिक छी
 वास्तव में आस्तिक छी
 परजीवी पाथरक नजि
 श्रमजीवी ओइ जीवंत
 प्रतिमाक पूजक छी
 जे मात्र लेख, नजि
 देब'टा जनै—ए
 सष्टा ओ सिरजै—ए
 सभ्यताक बाट नव
 पोषक ओ विश्व केर
 पोषण करै—ए
 गर्दै—ए नव इतिहास
 नव विश्व केर
 चारण हम ओकरहि छी

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

कैफियत

अहांक

एलसिशियन सं

बचवाक हेतु हमरा

धारण करय पड़ैछ

मुखओटा, कहियोकाल

असामान्य नञि

सामान्य बनवाक हेतु

पोशाकक संगहि

चेहरो बदल्य पड़ैछ

किन्तु

श्रीमान्

की फर्क पड़ैत छइ

आगि

समुद्रक गर्भाह में किएक ने हो

नारवानल सृष्टि करवाक

क्षमता त

रखिते अइ ।

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

ओ हमर भाइ छल

ओ

हमर भाइ छल

काल्हि

जकरा फांसी देल गेलै ।

अपराध ?

जनताक स्वयंभू सेवक

देशक भाग्य नियंताक अनुसार

ओ देशद्रोही छल ।

कारण ?

पैघ शिक्षा

आ डिगरीक अछेतो

ओ

देशक बहुलांश युवक जकाँ

हमप्लायमेंट कार्यालय में

लाइन नहि लगओलक

चाकरीक निमित्त

शेठ-साहुकारक

दुआरि नहि खट-खटओलक

नेता सभके

तेल नहि लगओलक ।

ओ चल गेल

निछुछ देहातक एगो

बोनिहार-बस्ती मे

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

ओकरे सभक संग

रहैत छल

खटैत छल

खाइत छल

आ

पल्लवतिक समय

ओकरा सभ के

सिखबैत छलै

अ

आ

क

ख

ओ

हमर भाइ छल

काहि

जकरा फांसी देल गेलै ।

आर कहियाधरि

आर कहियाधरि

आर कहियाधरि होइत रहत

शील हरण

उतथ्य पतनी ममताक

देवगुरु वृहस्पति द्वारा

(बाधा कि द पोओत

शिशु गर्भस्थ)

आर कहियाधरि

आर कहियाधरि जनमैत रहत

अभिशापित

आन्धर भविष्य

मृत्यु अभिमन्युक

शत्रु निर्मित

सात-सातटा चक्रव्यूह तोड़ि
अपराजेय अभिमन्यु
जखन आपस अबेछ
त आलिंगन लेल बढल
हजार-हजार स्वजनक हाथ
ओकरा आवद्ध क लैत छैक
आ तैखन
पड़ैत छैक ओकरा पीठपर
सबधानल

एक नहि
अनेको छूरा
ओ आर्तनाद त नहि करैछ
उनटि क तकैतटा अछि
आ खसि पड़ैछ

ओना
महाभारतक ओ कथा
सुन्दरे नहि
आकर्षको अबस्ते छैक

जे
सातम द्वार भेदन कला सं
अनिभिल
सप्तमशरथी झं घरेल
अखगर अभिमन्यु

मृत्यु के प्राप्त भेल छल
आ सत्ते
एहीठाम होइत छैक
मृत्यु अभिमन्युक

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

अजगुत देश

ई आकाशवाणी थिक
विचित्र सम्वाद पढ़ि रहल छी
आचार्य अनटोटल

हेमनिए मे
भारतीय-भू-सर्वेक्षण विभाग के
एकटा नव देशक पता लगलैए
जे
तीन कात नदी
आ एक कात पहाड़ सँ घेरल अह
नामकरण कएल गेलैए
अजगुत देश

ओना
किछु भू-सात्विक लोकनिक मते
ई देश नव नहि
बड़ पुरान थिक
इतिहास सँ पुराण धरि
जनक
याज्ञवल्क्य
गौतम
कपिल
कणाद.....क

जन्मस्थान
मिथिला
तिरहुति वा
विदेह भूमिक चर्च

एकर स्वलंत प्रमाण थिक

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

मुद्रा

भू-सर्वेक्षण विभाग

एकरा नहि मानैछ

ओकर कहव छै जे

पुराण कथित

मिथिला देश मे

जनमल छलाह

शिव सिंह

अपन

भू-भाषा-संस्कृतिक रक्षार्थ

कएने छलाह संघर्ष—आजीवन

एक नहि

सतरह खेप

भेल छल पराजित

दिछी सुस्तान

तेहने होइत अछि

मिथिलाक सन्तान

परञ्च

एहि अज्ञात देशक

मनुक्खक आकृति आ

पशुक प्रवृत्ति बला जीव

ने त माउग अछि

ने पुरुष

ते ई देश

आनजे कोनो देश किएक न हो

मिथिला देश नहि भ सकैछ

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

किन्नहुँ नहि भ सकैछ

ओकर कहव छैक जे

पुराण कथित

मिथिला देश मे

जनमल छलाह

कविपति विद्यापति

घोषित कएने छलाह

बालचन्द्र विष्णुवाह भाषा

गओने छलाह

परम प्रिय

पावन

तिरहुत देश

परञ्च

आजुक

पमरियाक तेसर सन

हाँजी-हाँजी करैत

नाचि-नाचि

जनगन-मन गबैत

कविनामधारी जन्तुक ई देश

आर जे कोनो देश किएक ने हो

मिथिला देश नहि भ सकैछ

किन्नहुँ नहि भ सकैछ

ओकर कहव छैक जे

पुराण कथित

मिथिला देश मे

जनमल छलीह

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

जगजननी जानकी

धरती पुत्री

सीता

जनिका

अपमानित कय

कटओने छल

अपन

नाक

कान

लंकापति रावणक बहिन

सुपनेला

परञ्च

आजुक

सुपनेलाक तरबा चटैत

माँ मैथिली केँ

नाक

कान

काँटि

घर सँ

बेला देनिहार

सन्तानक ई देश

आर जे कोनो देश किएक ने हो

मिथिला देश नहि भ सकैछ

बिजहुँ नहि भ सकैछ

ओना

अनुसन्धान चलि रहल छइ

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

देश-विदेश सँ

भू-तात्विक

वृत्तात्विक

सभ आबि रहल छथि

बात

आगू बढ़ी रहल छइ

तेँ

विचित्र सम्बाद

आजुक लेल

एही ठाम

शेष मेल

देशक नाम छले सोनचिड़ैया

४१

एहि संएतीस बरख मे

आ

ओकर पयर थकमका जाइ छइ

हाथक दुनटनाइत घन्टी

चुप भ जाइ छइ

कातक

कोनो दोकान सं अबेत

रेडियोक आवाज

राष्ट्रपतिक भाषण

राष्ट्रक नाम

प्रगतिक लेखा-जोखा

आजादीक

संएतीसम वर्षगांठ पर

'संएतीस बरख !

ओ निसास छोड़ेए

आइ सं

ठीक संएतीस बरख पहिने

ओ कलकत्ता आयल छल

ओहिना मन छइ

सिनेमाक रील जकाँ

समस्त घटना

जेना आंखिक सोभा

नचैत होइ

एक दिन

निसाभाग राति मे

जखन कि सगरो गाम निसबद्ध छलै

हुम-हुम करैत

जुमि गेल छलै

गोर चलिसेक पुलिस

घेरि लेने छलै

चारूकात सं ओकर घर

घरक फट्टक तोड़ि देने छलै

आ

ओकर बाप के

पकड़ि क ल गेल छलै

ओना ई गप्प

ओकरा बाद मे पता लगलै

जे ओकर बाप

सोराजी दल में छलै

आ ओकरे गामक जमींदार

सतलरेन बाबू

ओकरा पकरबओने छलै

जे

पुलिसक संगहि छलै

से त

ओ अपने आंखिए

देखने छलै

तकर

मास छ-एक बाद

एक दिन ओ सुनलक

'देश अजाद भ गेलै

सोराजी दल जीति गेलै'

आ

तहिया ओकरो मन

खुसी सं नाचि उठल छल

लोक सभ कहै जे

आब ओकरो बाप केँ

जहल सं छोड़ि देसै

ओहो

घुरि गाम एतै

मुदा

दिन पर दिन

मास पर मास

बर्ष पर बर्ष बीति गेलै

ओकर बाप

घुरि क नहि एलै

आ

सतल्लरेन बाबू

ताही बेर

डिल्ली गेलै

लोक सभ कहै

मिनिस्टर बनि गेलै

आ

ताही साल

अगहनी मे

ओकर माम

गाम गेल छलै

घुरती काल अपने संग

एकरो कलकत्ता लेने एलै

‘सरो,

ई रिक्सा स्टैण्ड बनालेलन’....’

आ

तराक द ओकरा छावा पर

डंटा पडैत छइ

ओ छिलमिला जाइए

ठाढ़ पर नजरि पडैत छइ

कत्ते क पातर भ गेलैए

एहि संएतीस बर्ष मे

एहि संएसीत बर्ष मे—ओकर हाड़ कतेक

जगजियार भेलैए

एहि संएतीस बर्ष मे

एहि संएसीत बर्ष मे—ओकर डांड कत्ते क झुकलैए

एहि संएतीस बर्ष मे—

एहि संएतीस बर्ष मे—पुलिसक लाठी कत्तेक

सबधानल भेलैए

एहि संएतसीस बर्ष मे—

एहि संएतीस बर्ष मे—ओकर गारि कत्तेक घिनाओन भेलैए

एहि संएतीस बर्ष मे—

आ

ओकर पएर

अपनहि बढि जाइ छइ

घन्टी—

टुनटुनाय लगै छइ

‘एन्ने कहाँ ?

इधर चल’

आ

पुलिसक धक्का सँ

ओ खसैत-खसैत बंचैए

सामने थाना छइ

जहिया

ओ कलकत्ता आयल छल

ई थाना नहि छलै

ओ अपन गामक

असगरे छल

एखन

गोर चालीसेक हेतै

केओ ठेला ठेले छइ

केओ भाका उघे छइ

ओ गाम गेल छल

सगरो दुसपटोली भइ पड़े छलै

एकोगो पुरुख-पातक पता नहि

जेना ओइ बेर भेल छलै

जखन कि

ओकरा बाप केँ

पकड़ि क ल गेल छलै

सगरो दुसपटोली

पड़ाइ लगि गेल छलै

ओना

एहि बेर लोक

हरै गाम छोड़ि

पड़ाएल नहि छलै

पेटक खातिर

पड़ाएल छलै

दिल्ली

पंजाब

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

ओ सोचैए

एहि संएतीस बर्ख मे

कत्तेक टोल

कत्तेक गाम

खाली भेल हेतै

एहि संएतीस बर्ख मे

एहि संएतीस बर्ख मे कत्तेक जुआन-जहान

अपन लोक-बेद

गाम-घर

तेजने हेतै

एहि संएतीस बर्ख मे

एहि संएतीस बर्ख मे रोट्टी कत्तेक महंगा भेलैए

एहि संएतीस बर्ख मे

एहि संएतीस बर्ख मे मजूरी कत्तेक सस्त भेलैए

एहि संएतीस बर्ख मे

एहि संएतीस बर्ख मे थानाक संख्या कत्तेक बढ़लैए

एहि संएतीस बर्ख मे....

‘साला निकाल पांच ठो रुपैया’

‘पांचगो कहाँ स आयगा हुजूर’

आइ मोर स त

दुइएगो कमाया हाय....

हमरा लाइसेन्सो हाय....

‘लाइसेन्स का बच्चा....’

आ

एगो जवर्दस्त थापर

ओकरा कनपट्टी मे लगे छइ

ओ चकमाउर द

खसि पड़ेए

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

आत्मिक भाग

अन्हार भ जाइ छइ
ओकर डाँड़ मे खोंसल बटुआ
पुलिसक हाथ मे झुलै छइ
ओकर पसेनाक कमाइ
वू गो टाका
पुलिसक हाथ मे उड़िआइ छइ
पुलिस बिहूँसैए

कातक

कोनो दोकान सं
रेडियोक आवाज अबै छइ
राष्ट्रपतिक भाषण

राष्ट्रक नाम

प्रगतिक लेखा जोखा

आजादीक

संएतीसम वर्षगांठ पर

रिक्सा वाला

एखनो बेहोश पड़ल अइ

ओकरा चारुकात

अन्हार छइ

गुज अन्हार

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

आ

कोनो नरभक्षीक चांगुर सं पड़ाएल
कपिला गाय सन कपैत
आश्रय तकैत ओ माउग
एकटा पिशाचक हाथ पड़ि गेल
जे ओकरा

हाथ पएर वार्निह

महानगरक चौबटिया पर

क देलकै बेनगन

धरती पर चित्ते पारि

सगरो देह पोति देलकै

बिभिन्न रंग सं

आ चिकरि क बाजल

भाइ सम !

कने बिलमि जाउ

एहन अवसर जिनगी मे

अबैत छइ कहियो काल

अवस्ते देखने जाउ

ई कोनो जादू-टोना नाज

हाथक कमाल छइ

सरिपहुं बेमिसाल छइ

एकदम सं टटका

स्वदेशी कला

एकता मे अनेकता आइ यम सौड़ी

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

अनेकता मे एकताक

जीवन्त छयि

एहि स' नीक दोसर

की भ पाओत भला

आकि नञि

त भाइ सभ !

कने जेर स' थपड़ी बजाउ

आ दू - दू डेग

पाछू भ जाउ***

आ भीड़

जकरा मात्र कानटा होइ छइ

वाह - वाह करए लागल

थपड़ी पीटए लागल ...

ओना

ई बात दिगर भेलै

जे ओ असहाय माउग

पहिनहि—बहुत पहिनहि

मरि गेल छलै

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

राजा रत्नसेन

गुरु-गंगाक आशिवदि

भेटल छलनि राज-पाट

मुदा पूर्व जन्मक

तपस्याक छलनि चूक

आखि देखि नहि पओलनि पुन

जे दितनि मुंह मे उक

भेबो केलनि त

एगो बेटी

ओलक टोटी

नान्हिजे टा सँ बहसलि बहवाड़ि

मुँहपर त नहि

मुदा परोक्ष में त सब बजबे कए

'छौड़ी हेतै बड़ छिनाड़ि'

बापो के कि सोहाइन

फुटली आखि

'धीत भरिक छौड़ी के

केना जनमि गेलै पांखि'

ओना लोक त इहो बजे

'बेटी त वापेक ने छइ'

आ

बाप बेटीक छिछा देखि

मनहि-मन होथि मुर-मुमान

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

चिर रोगाहि महारानी
रूपमती कमलावती
जखन नहि भेलनि सहि
त मूनि लेलनि औखि
तेजि देलनि परान

राजा रजसेन
बहुतो दिन धरि केलनि एकलख राज
कमला नाम-यश
मुदा विधिक विधान
लिखलाहाक आगु चलिंते छइ
ककर बश
एक दिन हटात् बाजि गेला टन
अकाल मृत्यु भेलनि
ब्रह्महत्याक पाप
माथपर सवार छलनि
फल जेहन हेबाक चाही
तेहने भेलनि

राजा रजसेन मरि गेला
देश भरि मे
शोक-पालनक आदेश भेल
राजावाली बात छलै
देश-देशान्तर सँ

राजा-महाराजा एला
जबारी नोतल गेल
भोज भेल, भात भेल
माल-माउसक परात

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

भेल राज्याभिषेक
बेटाक अभाव मे बेटी
राजकुमारी भुवनमोहिनी
सिंहासनक रखलनि टेक

ओना
बहुतो शेट-सामन्त लोकनि
केलनि विरोध

'मौगी कतौ राजा हो
देशक अपमान थिक'
मुदा राजकुमारी भुवनमोहिनी केँ
रूप छलनि, गुण छलनि
देखल छलनि बाट-घाट
घूरल छलनि देश-विदेश

बापेक सङ्ग
पीने छली कतेको घाटक पानि
घापे मँ सिखने छली
वशीकरण मंत्र

शेट सामन्त लोकनि मे फुट-भेल
देखि-सुनि रूप-गुण

राजकुमारी भुवनमोहिनी
किछु के पटिया लेलनि
अपना मे मिला लेलनि

जतया दिन रूप छलै, गुण छलै
भोग कएल

मुगा बना क राखि लेल तकराबाद
बहुतो के भोग देल

भगवतीक धीचेबाट

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

राजकुमारी छली बुद्धिमती

शत्रु सँ मुक्ति पाओल

राजकुमारी छली सती

लोक सभ सुयश गाओल

राजकुमारीक लिप्सा बढ़ैत गेल

भोगक लिप्सा

धनक लिप्सा

नामक लिप्सा

राजकुमारी धुरय लगली देश-विदेश

नव-नव श्रेष्ठ सामन्त

राजा-राजकुमारक होइत रहल

समावेश

राजकुमारी कहलनि—

हमरा कोइलीक कानन नहि मोहाइए

ताइ सँ कौआ थिक नीक

कार कौआ'

अमला सभ ढोलहो दिया देलक—

देश में एकोगो कोइली नहि रह-ए

कौआक संख्या बढ़ाओल जाय

कार कौआक'

राजकुमारी कहलनि—

बात कम

काज बेसी हेबाक चाही

देशक परजा के

गदहा सँ शिक्षा लेबाक चाही

राजकुमारी कहलनि—

हमरा मनुक्ख मं बेसी

पसिन्न अइ कुकुर

एलशिसियन कुकुर'

दरवारी सभ

कुकुर जकां भों भों कर-ए लागल

रमलिल्लाक हनुमान जकां

नकली नाइडि डोलव-ए लागल

राजकुमारी कहलनि—

देशक प्रगति

प्रगति हित शान्ति

शान्ति हित शक्ति

सम्पूर्ण शक्ति हमरा हाथ मे चाही

हम शक्तिक उपासना करव

मसान साधना करव

हमरा आसव चाही

चाही नर-मुंड

हमरा महामांस चाही.....

देश मे

जल्लाद सभक

चहल - पहल बढ़ि गेलै

मसानी शान्ति पसरि गेलै

राजकुमारीक बापक बोलसंगी

मओनी बाबाक मओन भंग मेल

घोषणा केलनि—

हमरा महाभारत पढ़ल अइ

अनुशासन - पर्व

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

सोन सभ

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

राजकुमारीक खजाना मे वन भेल
देश मे बहैत छल दूधक नदी
कुध सभ

सुखा गेल
राता-राती बिला गेल
देश मे बह-ए लागल
शोणितक नदी
लोक मे आतंक पसरि गेल
लोक सभ जनैत छल
अपना मे बजैत छल

राजकुमारी छथि हंकलि डाइन
हंके छथि गाछ
नडटे नचैत छथि
पोसने छथि गाहीक गाही
भूत प्रेत जिन्न मनुखदेवा'
लोक सभ जनैत छल
अपना मे बजैत छल
मुदा वाहर सभ
बौक भेल रहैत छल
हरे कपैत छल

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया
राजा रत्नसेन
रानी रूपमती कमलावती
राजकुमारी भुवनमोहिनी
राजकुमारी के दुगो बेटो छलनि
पहिल त दड़ बेश

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

शितलाक बाहने बुभु
ताल लागल दोसराक बेर
नय आसमर्द भेल

'राम - राम ई की भेल
राजकुमारीक कोखि सँ...
पाप कतौ भांपल गेल'....
मुदा, राजाक बात छलै
रत्नसेनक परताप छलै
भांप-तोप कएल गेल
जोतषी बजाओल गेल
लघन - कर्म देखल गेल
रीपनि बनाओल गेल
दोल्हो दियाओल गेल

राजकुमारीक कोखि सँ
मनुक्ख नहि
देवताक जन्म भेल
साक्षात भैरव - अवतार'

ओना
राजकुमारीक मन मे
ताही दिन लेने छल
चिन्ता पेशार

एहिना बीतैत गेल
दिन पर दिन
मास पर मास
वर्ष पर वर्ष

भैरव भेला पेश
गदह पचीमी मे पएर देल

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

सुनलनि कतौ अपन जन्मक विरतास्त
एक दिन एना भेल
थेलनि माइक भोट
पुछलथिन—

के थिक हमर बाप
मत्त - मत्त तौ राज

आर कते की
अवाच - कुवाच
राजकुमारी चुप
जिनगी मे पहिले बेर भेल छली मओन
भुकल छलनि माथ
सुदा ओहो त कम नहिने छली

बापे सँ सिखल छलनि

मारन

मोहन

उच्चाटन

शान्तस्वरे बजली—

बुढ़ारी मे हमरा
इएह लिखल छल
जे आन सँ नहि
तोरा मुँहे सतल
खोचैत छलहु—
राज - पाट तोरा सोंपि
अपने लेव काशी बाप
आर छीह कते दिन
जेठजन त ओहने छथि
माउग ने मनुकब

बलिगोबना****

देशक नाम छले सँ नचिड़ेया

राजकुमारीक मंत्र कैलकनि काज
भैरव भेला शान्त
राजकुमारी छली कलान्त
तहिथा सँ राज - काज
देखल करथि बेसी भाग
भैरव - अवतार—छोट राजकुमार

राजकुमारी साधारण महिला नहि छली
आब त आर नहि
चोटाएल सांप छली
अक्सरक प्रतीक्षा मे
भैरव छला नेना—अवखिच्चू

सरिपहुँ गुनभिक्क

राजमद मे मत्त

दिन - राति

सुरा - सुन्दरी मे ब्यस्त

राजकुमारी छोड़लनि अगिनवाण

अपटी खेत मे गेलनि परान

राजकुमारी

खजानाक कुंजी फेर सँ सम्हारलनि

राजकुमारी कहलनि—

हम बड़ दुखी छी

पुत्र - शोक मे

केहन हमर कथार

पति परमेसर

पिता परमगुरु

पुत्रो मुइल अकाल

हमरा सहारा चाही

देशक नाम छले सोनचिड़ेया

लोक सभ बुझलक—

राजकुमारी सरिपहुं दुखी छथि
चढ़ल जुआनी स्वामी मुइलथिन
मुइलथिन वाप माथकेर छांह
बेटा मुइलनि एहन समय मे
जखन वयस के लगलनि धाह
मुदा

राजकुमारी धन छथि
बल्लहारी कही हुनके
एहनो स्थिति मे
आगि स' नहिजे ने खमलनि
एको बुझ नोर.....

दरबारी सभ सोचलक
अपना मे बिचारलक
सत्ते राजकुमारी दुखी छथि
हुनका सहारा चाहियनि
शितला - बाइन के वजाओल गेल
ओकरा
राजनीतिक पाठशाला मे
भर्ती कराओल गेल
शितला - बाइन
पहिने त दोलती भाइलनि
कान पट - पटओलनि
फेर स्थिर चिते सिखय लगला
ओना मामी धइ

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया
राजा रत्नसेन

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

राजकुमारी भुवन मोहिनी

आ एहीठाम अबैत - अबैत
लागि जाइ छल हमर आखि
कहियो वा
सुति रहै छल
अस्ती बर्खक बुद्धि—हमर नानी
आ हमर जिज्ञासा वनले रहै छल
आखिर ओइ देशक की भेलै
जकर नाम छलै सोनचिड़ैया
मरि गेला राजा रत्नसेन
छोट राजकुमार—भैरव अवतार
मुदा राजकुमारी भुवन मोहिनी
शितला-बाइन—जेठ राजकुमार "

ओइ दिन हम जगले रही
मुदा नानी हफियाइए
बड़ राति भेलै
आब सुति रहू'

ओ कहै—ए
मुदा हम जिह पकड़ि लइ छी—
राजकुमारीक की भेलै
आर की हर्ते
ओ हफियाइत उदास स्वरे कहै—ए
अनका पर ह'ट
त अपना पर पाथर
पापक घैल भरि गेलै
फुटि गेलै

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

प्रेत चाह्य भशौच

फांक पात्रि एक दिन

राजकुमारी सजि-धजि क

बहराएले छली

अपने पोसल जिन्न

घेठ मचोड़ि देलकनि

जा लोक दौड़य - दौड़य

ता खेल खतम्

ओना

लोक त कहिते छलै जे

कएल घरेक छलै

राम जानथि

कोन सत्त कोन फूसि'''

जानि ने नानी आर

की सभ कहने छलि

हमर आंखि लागि गेल रह-ए

हम सुति रहल रही

परञ्ज

पहिलुक कथा ओहिना अइ मन

आखर आखर—

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

राजा रत्नसेन

रानी रुपमती कमलावती

राजकुमारी सुवनमोहिनी'''

किछु क्षणिका

आशंका

बर खसवाक आशका नेने

सुतैत छी प्रत्येक राति

आ चेहाएल नीन्न

भोरे टुटैत

पड़ाइ छी बाट पर

मुदा गाड़ी घोड़ा पछोर धेनहि जाइ-ए •

स्थिति

आ जानि ने

अकस्मात् केमहर सं आनि

एक टुकड़ी कारी मेघ

भांषि देलकै—चान क

अपने लोक

अनचिन्हार बनि गेलै •

नेताक प्रति

आइ काहिह हम

बड़ बिसरभोर भ गेल छी

श्रोमान्

हमरा कहाँ अइ मन

कहने रही

अपने जे काहिहखन •

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

जनता के

बड़ - बड़ घोड़ी
भासि गेल
नरघोड़ी पुछय पानि कते
तहिना जनतो सरकार बुभाइछ
थाहि रहल अछि जनता के •

वर्षान्त

एके क्षण मे
ककरो मृत्यु आ ककरो जन्म
स्वाभाविक वा अस्वाभाविक
भनहि जे हो
थिक धरि सत्य
आ तहिना सत्य थिक जे
लोक शोक नहि
उत्सव मनावै - ए •

उद्यम

मात्र डे'गओने सूप
दरिद्रा भागि सकत की
बिना उद्यमे
अन धन लक्ष्मी
आबि सकत की •